अध्याय
02

राजा, किसान और नगर
आरंभिक राज्य और अर्थव्यवस्थाएँ
(लगभग 600 ई० पू० से 600 ई० तक)

परिचय

- हड़प्पा सभ्यता के पतन के बाद लगभग डेढ़ हजार वर्षों के लंबे अंतराल में इस महाद्वीप में कई प्रकार के परिवर्तन देखने को मिलते हैं।
- इसके बाद वैदिक सभ्यता की शुरुआत हुई, इसके दो भाग थे-
  (1) ऋग्वैदिक काल, (1500 ई०पू० से 1000 ई० पू० तक)
  (2) उत्तर वैदिक काल उत्तर वैदिक काल 1000 ई० पू० से 600 ई० पू० तक)
- ऋग्वैदिक काल में ऋग्वेद के लेखन का कार्य किया गया। उत्तर वैदिक काल में अन्य तीन वेदों का लेखन कार्य किया गया।
- कृषक बस्तियाँ अस्तित्व में आई।
- ईसा पूर्व पहली सहस्त्राबदी में दक्षिण भारत में शव के अंतिम संस्कार के नए तरीके सामने आए जिसे महापाषाण संस्कृति कहा जाता है।
- छठी शताब्दी ईसा पूर्व नए परिवर्तनों के प्रमाण मिलते हैं। जिसमें राज्य और साम्राज्य बनने की प्रक्रिया प्रमुख है।

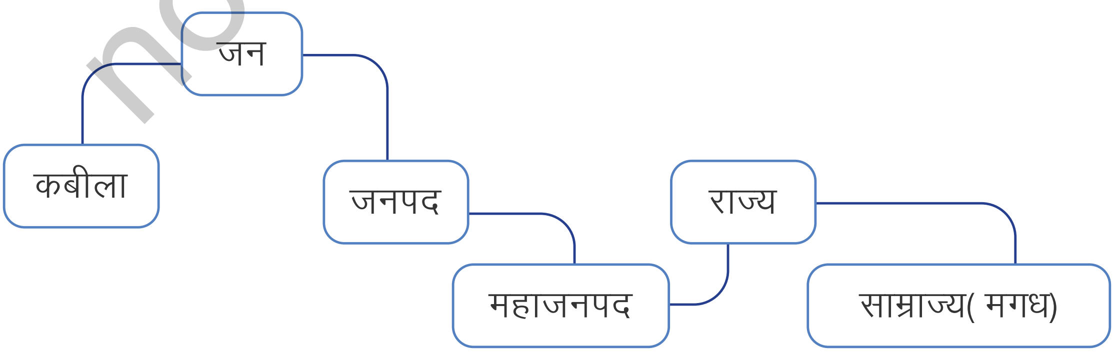

© JCERT not to be republished

राजनीतिक विस्तार

- वैदिक युग के जनपद, महाजनपद में ढल गए। यह महाजनपद उत्तर वैदिक कालीन राज्यों की अपेक्षा अधिक विस्तृत और शक्तिशाली थे।
- महाजनपदों का विस्तार उत्तर पश्चिम में पाकिस्तान तथा दक्षिण में गोदावरी तक हुआ।
- बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय एवं महावस्तु तथा जैन ग्रंथ भगवती सूत्र से महाजनपद के बारे में सूचना मिलती है।
- बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय के अनुसार 16 महाजनपद थे

16 महाजनपद (600 ई०पू – 340 ई०पू०)

	महाजनपद (राज्य)		राजधानी
1.	अवन्ति– उत्तरी अवन्ति	–	उज्जयिनी
	अवन्ति– दक्षिणी अवन्ति	–	महिष्मति
2.	अश्मक (दक्षिण भारत का एकमात्र महाजनपद)	–	पोटन
3.	अंग	–	चंपा
4.	कम्बोज	–	हाटक
5.	काशी	–	वाराणासी
6.	कुरू	–	इन्द्रप्रस्थ
7.	कोशल	–	आयोध्या/श्रावस्ती
8.	गांधार	–	तक्षशिला
9.	चेदि	–	शक्तिमती
10.	वज्जि	–	वैशाली
11.	वत्स	–	कौशाम्बी
12.	पांचाल– उ० पांचाल	–	अहिच्छत्र
	पांचाल– द० पांचाल	–	काम्पिल्य
13.	मगध	–	राजगीर
14.	मत्स्य	–	विराटनगर
15.	मल्ल	–	कुशीनगर
16.	शूरसेन	–	मथुरा

© JCERT not to be republished

Map 1
Early states and their capitals

© NCERT not to be republished

मगध का उदय और उत्कर्ष

विस्तृत आर्थिक आधार

- लोहे के व्यापक उपयोग के कारण (हल के फाल लोहे से) कृषि क्षेत्र में समृधि आई
- विस्तृत मैदानी क्षेत्र जो अत्याधिक उपजाऊ होने के कारण कृषि विकास का आधार था।
- इस क्षेत्र में जनसंख्या घनत्व अपेक्षाकृत अधिक होने से,श्रम की आवश्यकता की पूर्ति संभव हो सका।
- खनिज संसाधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध थे लोहे और तांबे के अयस्क का विशाल भंडार मौजूद था, जिसने सैनिक तकनीक को प्रोत्साहन दिया।
- नदी व्यापार पर नियंत्रण गंगा,सोन, पुनपुन, गंडक इत्यादि का विशेष वाणिज्यिक महत्व था, क्योंकि उस काल में व्यापार में नदीमार्ग का विशेष महत्व था।
- भारी संख्या में हाथियों की उपलब्धता

अनुकूल भौगोलिक स्थिति और प्राकृतिक सुरक्षा

- मगध की भौगोलिक स्थिति है मगध की प्राकृतिक सुरक्षा को सुनिश्चित करती थी, प्रथम राजधानी राजगृह पहाड़ियों से गिरा क्षेत्र था तथा वहां बढ़िया जल संसाधन की उपलब्धता थी, द्वितीय राजधानी पाटलिपुत्र नदियों से घिरा क्षेत्र था। इस संदर्भ में मगध बाहरी चुनौतियों में आक्रमण से बहुत सीमा तक मुक्त था
- मगध के चारों ओर प्राकृतिक सुरक्षा के साधन थे और निकटवर्ती जंगलों में पाई जाने वाली गज सेना से उसे पर्याप्त बल मिला। इसके साथ-साथ लोहे के समृद्ध भंडार मगध की आरंभिक राजधानी राजगृह से दूर नहीं थी, मगध को सैनिक दृष्टि के साथ-साथ आर्थिक दृष्टि से भी लोहा वरदान साबित हुआ।

सैनिक शक्ति तथा संगठन

- सैनिक दृष्टि से मगध अत्यधिक शक्तिशाली था। गंगा घाटी और प्राची के राजा अग्रमीज ने अपने राज्य में प्रवेश करने वाले मार्गों की रक्षा की व्यवस्था की थी। सैनिक संगठन के मामले में मगध को एक खास सुविधा प्राप्त थी।
- भारतीय राज्य घोड़े और रथ के उपयोग से भलीभांति परिचित थे, किंतु मगध ही पहला राज्य था जिसने अपने पड़ोसियों के विरुद्ध हाथियों का बड़े पैमाने पर प्रयोग किए किया था। निसंदेह मगध शासकों ने अपनी सेना में हाथियों को महत्वपूर्ण स्थान दिया था, इसका प्रयोग दुर्गों को तोड़ने सड़क और यातायात की अन्य सुविधाओं से रहित प्रदेशों में की जाती थी।

सामाजिक खुलापन विकास के अनुकूल दशा।

- मगध क्षेत्र के सामाजिक जीवन का खुलापन और विकास के अनुकूल दशा ने इसके उदय में योगदान दिया।
- मगध क्षेत्र पवित्र आर्यावर्त क्षेत्र से बाहर होने के कारण इस पर आर्य रूढ़िवादी आदर्शों का अपेक्षाकृत कम प्रभाव था।
- बौद्ध और जैन धर्म का उदय हुआ, विशेषता बौद्ध धर्म को एक सामाजिक आंदोलन के रूप में देखा जा सकता है। इसका प्रभाव इस क्षेत्र के सामाजिक सांस्कृतिक जीवन पर पड़ा, जो कि समाज के खुले पन को बल प्रदान किया।

आरंभिक शासक वर्ग की भूमिका।

- प्रारंभिक शासक वर्ग की राजनीतिक महत्वाकांक्षा और राजनीतिक योग्यता का प्रभाव भी महत्वपूर्ण था।इस संदर्भ में बिंबिसार की राजनीतिक सुदृढ़ीकरण की नीति, विस्तार की नीति, साम्राज्य वादी दृष्टिकोण में विशेष महत्व रखती है।
- बिंबिसार ने साम्राज्य विस्तार के लिए युद्ध एवं वैवाहिक संबंध दोनों का सहारा लिया।
- अजातशत्रु के प्रयास भी इस संदर्भ में महत्वपूर्ण थे काशी को मगध में मिलाया जाना और लिच्छवि राज्य को कई हिस्सों को मगध ने मिलाया जाने में उसका महत्वपूर्ण योगदान था।

© JCERT not to be republished

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

मगध के प्रमुख राजवंश एवं संस्थापक

राजवंश	अवधि	संस्थापक
हर्यक वंश	544BC-412BC	बिंबिसार
शिशुनाग वंश	412BC-344BC	शिशुनाग
नंद वंश	344BC-322BC	महापदम्नंद
मौर्य वंश	322BC-185BC	चंद्रगुप्त मौर्य
शुंग वंश	185BC-73BC	पुष्यमित्र शुंग
कण्व वंश	73BC-28BC	वसुदेव
सातवाहन वंश	28BC-220AD	सिमुक
गुप्त वंश	319AD-550AD	श्री गुप्त
परिवर्ती गुप्त वंश	550AD-750AD	—

© JCERT not to be republished

मौर्यों की जानकारी के स्रोत

साहित्यिक स्रोत

ब्राह्मण साहित्य में पुराण, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, विशाखदत्त का मुद्राराक्षस, मेगास्थनीज का इंडिका आदि बौद्ध ग्रंथ में दीप वंश, महा वंश एवं जैन ग्रंथ में भद्रबाहु के कल्प सूत्र एवं हेमचंद्र के परिशिष्ट परवन

स्ट्रेबो अर्रियन कार्टियस आदि के विवरणों से चंद्रगुप्त के विषय में जानकारी मिलती है। चीनी यात्री जैसे फाह्यान, ह्वेनसांग एवं इत्सिंग के यात्रा विवरण से भी जानकारी मिलती है।

पुरातात्विक स्रोत

अशोक के शिलालेख मौर्य साम्राज्य के अध्ययन के प्रमाणिक स्रोत हैं। जिसमें स्तंभ अभिलेख, बृहद शिलालेख, लघु शिलालेख तथा अन्य प्रकार की अभिलेख शामिल है। लगभग सभी अभिलेख प्राकृत खरोष्ठी लिपी भाषा एवं ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण है। यह अभिलेख सामान्यतः राजमार्गों के किनारे अवस्थित हैं।

राजनीतिक विस्तार

- चंद्रगुप्त मौर्य 322 बी.सी. के लगभग मौर्य साम्राज्य की नींव डाला 298 बी.सी. के आसपास उसकी मृत्यु हो गई।
- इसके बाद बिंदुसार शासक बना 298 बी.सी. से 272 बी.सी. तक विराम।
- इसके बाद अशोक 268 बी.सी. से 232 बी.सी. तक
- इस वंश का अंतिम शासक बृहद्रथ था।

मौर्य प्रशासनिक व्यवस्था

नौकरशाही व्यवस्था **न्याय व्यवस्था** **नगर प्रशासन व्यवस्था** **सैनिक व्यवस्था** **कराधान व्यवस्था** **पुलिस एवं गुप्तचर व्यवस्था**

मौर्य राज्य का नौकरशाही व्यवस्था पिरामिड नुमा व्यवस्थित और विस्तृत था।। यह पूरी तरह से श्रेणी बद्ध थी इन श्रेणियों के अधिकारियों के वेतन मानव में भिन्नता मिलती है। मंत्री पुरोहित सेनापति और युवराज उच्च वेतनमान के पदाधिकारी होते थे। कौटिल्य ने 18 तीर्थों और 27 अध्यक्षों की चर्चा की है।

चंद्रगुप्त मौर्य ने एक विशाल सेना की स्थापना की थी। चंद्रगुप्त ने एक चतुरंगिणी अर्थात हाथी, घोड़े, रखता पैदल सेना का संगठन किया जल सेना का भी संगठन किया मेगास्थनीज के अनुसार संपूर्ण सेना के प्रबंध के लिए 30 सदस्यों की एक समिति होती थी सेना का प्रबंध 6 भागों में विभक्त था।

दंड विधान बहुत कठोर था राज्य कर ना देने का सरकारी कर्मचारियों के साथ अपराध करने पर मृत्युदंड दिया जाता था। न्याय की सबसे छोटी इकाई ग्राम संस्था का होता था इसके ऊपर संग्रहण फिर द्रोणमुख और फिर जनपद संधि के न्यायालय होते थे इसके ऊपर पाटलिपुत्र में विद्यमान धर्म स्थानीय और कंटक शोधन न्यायालय थे। सबसे ऊपर राजा होता था।

अर्थशास्त्र के अनुसार कर कादर* था, इसे भाग कहा गया है इसके अतिरिक्त राजा वली नामक कर भी लेता था।

सशक्त प्रकार की गुप्तचर व्यवस्था थी जिसके अंतर्गत गुढ़ पुरुष संचार स्थानिक पुलिस आणि प्रतिवेदक आदि का उल्लेख मिलता है मौर्य ने पुलिस एवं फौजदारी प्रशासन की एक सक्षम व्यवस्था का विकास किया जिसमें जासूसी व्यवस्था भी शामिल थे।।

मौर्य प्रशासन व्यवस्था में नगर प्रशासन का महत्वपूर्ण स्थान था इससे स्पष्ट होता है कि मौर्य विभिन्न शक्तिशाली आर्थिक गतिविधियों के कारण उत्पन्न होने वाले मूल शहरी समस्याओं के प्रति चिंतित थे पाटलिपुत्र की नगर सभा उप समितियों में विभक्ति और प्रत्येक उप समिति के पांच पांच सदस्य होते थे जिसके द्वारा शहर का प्रशासन संचालित होता था।

© JCERT not to be republished

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

मौर्य कालीन आर्थिक प्रवृत्तियां

कृषि क्षेत्र

मौर्य काल में कृषि लोगों का मुख्य व्यवसाय था। कौटिल्य के अनुसार भूमि अकृष्ट स्थल (ऊंची भूमि विवीत (चारागाह) अदेव मातृक हो। मेगास्थनीज के अनुसार किसान दूसरी जाती थी। सारी भूमि राजा की होती थी।

शिल्प क्षेत्र

मौर्यकालीन भारत में शिल्प का पर्याप्त विकास हुआ, इसका मुख्य कारण कृषि एवं खनिज पदार्थों की उपलब्धता थी। भारतीय विविध प्रकार के कपड़ा बनाने में निपुण थे, उस समय में सूती वस्त्र के केंद्र के रूप में मदुरा, अपरांत, काशी, बंग, वत्स्य आदि प्रमुख थे। यूनानी लेखकों के अनुसार भारत में सोना, चांदी, तांबा और लोहा बहुत अधिक मात्रा में पाया जाता था, ये लोग आभूषण भी बनाते थे।

व्यापार क्षेत्र

मौर्य काल में आंतरिक तथा विदेशी व्यापार उन्नत अवस्था में थी। व्यापारिक मार्गों के रूप में स्थल एवं नदियों दोनों का प्रयोग होता था। साम्राज्य के भिन्न-भिन्न प्रदेश अपनी-अपनी वस्तुओं के लिए प्रख्यात थे जैसे कश्मीर, कौशल, कलिंग तथा विदर्भ हीरे के लिए, हिमालय का क्षेत्र चर्म उद्योग, मगध वृक्ष की रेशे तथा उस से निर्मित वस्तुओं, काशी सभी प्रकार के वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध था। व्यवसायी दूर-दूर तक अपने माल के साथ यात्रा करते थे।

धम्म क्या है?

- धर्म शब्द संस्कृत भाषा के धर्म शब्द के अनुरूपीय है। जिसका शाब्दिक अर्थ है जिसका पालन अनिवार्य है, जो सुनिश्चित है, धर्मसूत्र में धर्म शब्द का तात्पर्य विधि है।
- **धम्म** एक सामाजिक संकल्पना के रूप में है इसके द्वारा सामाजिक सामंजस्य, सामाजिक समन्वय तथा सामाजिक संबंधों को सौहार्दपूर्ण बनाने एवं सामाजिक तनाव के निवारण का प्रयास किया गया। यह एक प्रकार की आचार संहिता थी जिसमें, सामाजिक व्यवहार के लिए मार्गदर्शन दिया जाता था।
- अशोक के **धम्म का अभिप्राय आचार के सर्व सम्मत नियमों से था।** दया, दान, सत्य, मार्दव, गुरुजन तथा माता पिता की सेवा अहिंसा आदि गुण अशोक के **धम्म** थे।
- अनेक समानता के बावजूद अशोक का **धम्म** बौद्ध धर्म से भिन्न था। वस्तुतः अशोक ने जिस धर्म को अपनाया और प्रचार किया वह सर्व हितकारी तथा लोक कल्याणकारी धर्म था। अशोक का **धम्म** आचार संबंधी सिद्धांतों का समूह था।
- **धम्म** की संकल्पना नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों से प्रभावित थी। जिन सिद्धांतों के पालन से नैतिक उत्थान संभव था अशोक के अभिलेख में उन्हें **धम्म** कहा गया है।
- **धम्म को** एक अर्थ में राजनीतिक संकल्पना के रूप में भी देखा जा सकता है। अशोक का उद्देश्य सामाजिक समन्वय द्वारा राजनीतिक एकीकरण करना था। अर्थात् राजनीतिक एकीकरण का जो एक वृहत्तर उद्देश्य था, वह इसमें निहित था।

© JCERT not to be republished

धम्म का प्रचार प्रसार

अशोक ने **धम्म** के प्रचार के लिए अनेक महत्वपूर्ण उपाय किए। सातवें स्तंभ लेख द्वारा अशोक ने धर्म के प्रचार के लिए जो कार्य किया उनकी जानकारी मिलती है। इस अभिलेख द्वारा उसने धार्मिक घोषणाएं करवाएं, **धम्म** स्तंभों का निर्माण करवाया तथा **धम्म** महामात्रों की नियुक्ति की, उसने **धम्म** यात्रा भी की तथा विदेशों में **धम्म** प्रचारकों को भी भेजा। सीरिया, मिस्त्र, ग्रीस, श्रीलंका इत्यादि

धम्म से संबद्ध घोषणाएं पत्थर के टुकड़ों और स्तंभों पर लिपिबद्ध करवाकर महत्वपूर्ण स्थानों पर स्थापित की गई।

युक्तों, राजुकों और प्रादेशिको को आदेश दिया कि वह प्रति पांच वर्षों पर **धम्म** अनुशासन के लिए निकले।

धम्म के प्रचार के लिए सबसे महत्वपूर्ण कार्य **धम्म महामात्रों की नियुक्ति।**

उसने अहिंसा की नीति का पालन करते हुए युद्ध बंद करवा दिए, स्वयं मांस मदिरा त्याग दिया।

विहार यात्रा बंद करवा कर अशोक ने **धम्म** यात्रा प्रारंभ की। उसने स्वयं बोधगया लुंबिनी निगालि सागर इत्यादि की यात्राएं की। उसने अपने बड़े पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को धम्म का प्रचार करने श्री लंका भेजा

© JCERT not to be republished

अशोक पर कलिंग युद्ध का प्रभाव/ अशोक बौद्ध कैसे हुआ?

अशोक कलिंग प्राप्ति हेतु एक विशाल सेना के साथ कलिंग पर आक्रमण किया। एक अत्यंत भयंकर युद्ध हुआ, जिसमें 100000 व्यक्ति मारे गए और डेढ़ लाख बंदी हुए, बहुत सारे सैनिक विकलांग हो गए।

अशोक की 13वें शिलालेख में कलिंग युद्ध की भी क्षमता का वर्णन किया गया है। इस युद्ध में हुए भारी रक्तपात तबाही और बर्बादी को देखकर अशोक के हृदय में बड़ा सुख उत्पन्न हुआ और उसे युद्ध से घृणा हो गई उसने जीवन में कभी भी युद्ध ना करने की प्रतिज्ञा कर ली।

एक बौद्ध भिक्षु की अहिंसात्मक शिक्षा का उस पर गहरा असर पड़ा और वह बौद्ध धर्म का अनुयाई हो गया।

उसने देवनामं प्रियदर्शी की उपाधियां धारण कर ली। राज्य में युद्ध को उसके स्थान पर धर्म घोष प्रारंभ हो गया राजा शिकार के बदले **धम्म** यात्रा पर निकलने लगा।

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

अभिलेख

अभिलेख उन्हें कहते हैं जो पत्थर, धातु या मिट्टी के बर्तन जैसी कठोर सतह पर खुदे होते हैं।

अभिलेख में उन लोगों की उपलब्धियां क्रियाकलाप या विचार लिखे जाते हैं जो उन्हें बनवाते हैं। अभिलेख एक स्थाई प्रमाण होता है।

अशोक की उपलब्धियों का मूल्यांकन

स्तंभ लेख जैसे रुम्मिनदेई दिल्ली- टोपरा, दिल्ली -मेरठ, लौरिया अरेराज, लौरिया नंदनगढ़, सांची इत्यादि।

शिलालेख जैसे एर्रागुड्डी, सासाराम, गिरनार, वैराट, (भाब्रू), कालसी, मानसेहरा इत्यादि।

गुहालेख जैसे सुदामा गुहा, विश्व झोपड़ी गुहा और कर्ण चौपड़।

अशोक की उपलब्धियों का मूल्यांकन

अशोक भारतीय इतिहास का एक आदर्श तथा महान व्यक्तित्व वाला सम्राट था। राज्याभिषेक के प्रथम 8 वर्षों तक साम्राज्य विस्तार की भावना से ओतप्रोत रहा वह एक साम्राज्यवादी शासक था वह अपने पूर्वजों के दिग्विजय की नीति को आगे जारी रखा। उसका साम्राज्य पूरे भारतीय उपमहाद्वीप तक फैल गया किंतु कलिंग युद्ध के बाद उसने युद्ध का सदैव के लिए परित्याग कर दिया।

अशोक ने अपना ध्यान सदा प्रजा के हितों में लगा दिया। उसने बौद्ध धर्म के प्रचार तथा अपनी प्रजा का भौतिक नैतिक तथा आध्यात्मिक उत्थान के लिए तन मन एवं धन से कार्य करने लगा। उसने देश की राजनीतिक जीवन में आदर्शवादीता, पवित्रता तथा कर्तव्य परायणता का समावेश किया।

अशोक ने अनेक लोक कल्याणकारी कार्य किए जिसके अंतर्गत उसने सड़कों का निर्माण कराया सड़क के दोनों किनारों पर छायादार वृक्ष लगवाए एवं पुण्य खुलवाएं। पशुओं एवं मनुष्यों के लिए औषधालय का निर्माण करवाया यात्रियों की सुविधा के लिए विश्राम गृहों का निर्माण कराया दान शालाओं की स्थापना की शिक्षा के प्रचार के लिए पाठशालाए बनवाई और साहित्य एवं कला को प्रोत्साहन दिया।

अशोक संभवत अद्वितीय सम्राट था जिसने विजय के उपरांत युद्ध नीति का परित्याग किया। वह एक और विजेता था तो दूसरी ओर अहिंसा का पुजारी। उसकी धार्मिक सहिष्णुता उच्च कोटि की थी उसने धर्मों के युग में सहिष्णुता की भावना का प्रचार किया।

उसने वसुधैव कुटुंबकम के सिद्धांत का क्रियात्मक रूप संसार के सम्मुख रखा। वह बौद्ध धर्म का आश्रय दाता बना एवं उसका प्रचार प्रसार भारत से बाहर करके उसे एक विश्व धर्म बना दिया।

© JCERT not to be republished

मौर्य साम्राज्य के पतन के कारण

- ब्राह्मणवादी प्रतिक्रिया
- अशोक की शांति वादी नीति
- लोकप्रिय विद्रोह
- उत्तराधिकारी का नियम
- अशोक के पश्चात् साम्राज्य विभाजन
- मौर्य साम्राज्य में आर्थिक और राजनीतिक विविधता
- मौर्यों की भारी-भरकम कर व्यवस्था
- कमजोर उत्तराधिकारी
- राज्य के प्रति निष्ठा की अनुपस्थिति

© JCERT not to be republished

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

गुप्तों के अध्ययन या जानकारी के स्रोत।

सिक्के

सिक्का भी गुप्तों के इतिहास का एक महत्वपूर्ण साधन है। इन मुद्राओं से जहां एक और राजनीतिक इतिहास के अध्ययन में सहायता मिलती है वहीं दूसरी तरफ तत्कालीन संस्कृति एवं दैनिक जीवन का भी ज्ञान प्राप्त होता है।

इन मुद्राओं में उत्कीर्ण लेखों से गुप्त सम्राटों की पदवियों एवं उनके धार्मिक विश्वासों की जानकारी मिलती है।

ज्यादातर गुप्त कालीन सिक्के सोने के हैं, इससे पता चलता है कि राज्य की आर्थिक अवस्था अच्छी थी तथा प्रचुर मात्रा में सोना प्राप्त होता था।

अभिलेख

पुरातात्विक साधनों में सबसे महत्वपूर्ण स्थान अभिलेखों का है। गुप्तकालीन अभिलेख शीला स्तंभ एवं ताम्रपत्र पर खुदे हुए हैं। एक अभिनय लौह स्तंभ पर भी मिला है मोहरो एवं मुद्राओं पर उत्कीर्ण अभिलेख भी हमारी सहायता करते हैं इन अभिलेखों से गुप्त शासकों की वंशावली उनके कृतियों उनकी दान शीलता एवं राजनीतिक निपुणता का पता चलता है।

सरकारी अधिकारियों एवं प्रशासनिक व्यवस्था की भी जानकारी अभिलेखों से मिलती है, गुप्तकालीन अभिलेख सामाजिक आर्थिक एवं धार्मिक अवस्था की भी जानकारी देते हैं। गुप्त अभिलेखों में सबसे महत्वपूर्ण समुद्रगुप्त का प्रयाग प्रशस्ति है।

अन्य अभिलेखों में चंद्रगुप्त द्वितीय का महरौली का लौह स्तंभ कुमारगुप्त का दामोदरपुर ताम्र लेख मंदसौर शिलालेख आदि महत्वपूर्ण है।

फाहियान का विवरण

फाहियान चंद्रगुप्त द्वितीय के समय बहुत ग्रंथों की खोज में भारत आया था। वह लगभग 399 से 411 ई० तक भारत में रहा। इसने बौद्ध धर्म का ज्ञान प्राप्त किया इसके विवरण से बौद्ध धर्म के संबंध में अच्छी जानकारी प्राप्त हो जाती है।

प्रशासनिक व्यवस्था की चर्चा करते हुए फाहियान बताता है कि उस समय देश में सूत्रीय प्रशासनिक व्यवस्था थी राजा के अनेक अधिकार थे परंतु वह प्रजा के हित के भावना से काम करता था। उस समय प्रजा सुखी संपन्न थी।

अर्थव्यवस्था में कौड़ियों का प्रचलन था। विराम अपराधों पर नियंत्रण रखने के लिए कठोर दंड की व्यवस्था थी। रामधन तो नहीं दिया जाता था परंतु अंग भंग की सजा अवश्य ही दी जाती थी। वन्य जीव हिंसा पर प्रतिबंध था वर्ण व्यवस्था की जटिलता इस समय बैठ गई थी।

© JCERT not to be republished

गुप्त प्रशासनिक व्यवस्था

गुप्त प्रशासनिक व्यवस्था में कोई नया दृष्टिकोण दृष्टिगोचर नहीं होता है बल्कि मौर्य प्रशासन का ही प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

राज व्यवस्था के विभिन्न पक्ष

राजा - राजा सभी शक्तियों का प्रतीक था। राजा का महत्वपूर्ण कर्तव्य वर्णाश्रम धर्म की देखरेख करना था राजा अपने सभी प्रदेशों की सभी भूमियों का वैध स्वामी माना जाता था इसने भूमि कर वह भूमि अनुदान के अधिकार को वैधता प्रदान कर दी।

मंत्री परिषद- मंत्रिपरिषद एक और स्पष्ट इकाई प्रतीत होती है इसे मंत्री अमात्य सचिव भी कहा जाता था इनका पद वंशानुगत होता था यह गुप्त साम्राज्य के महत्वपूर्ण हिस्सा थे।

राजनीतिक प्रशासनिक इकाइयां

गुप्त शासक द्वारा नियंत्रित साम्राज्य कई प्रांतों में विभाजित था भुक्ति कई प्रांतों में विभाजित था भुक्ति प्रशासन की सबसे बड़ी इकाई थी भुक्ति विषय या जिलों में बटा हुआ था जिला विश् में विभक्त था। प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी

नौकरशाही व्यवस्था

गुप्तकालीन नौकरशाही व्यवस्था मौर्य की तुलना में कम विस्तृत और कम सुदृढ़ था गुप्त काल में एक नए प्रकार की सामाजिक आर्थिक राजनीतिक विकास में विस्तृत नौकरशाही व्यवस्था की आवश्यकता को कम कर दिया।

सामंती व्यवस्था के उदय के कारण भी विभिन्न लघु क्षेत्रों पर प्रभाव प्रत्यक्ष तौर पर दिखता है।

गुप्तकालीन प्रशासन में जो विकेंद्रीकरण की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है उसने भी नौकरशाही व्यवस्था के विकास की गति को कम करने का काम किया।

गुप्तकालीन नौकरशाही की एक मुख्य विशेषता इसका वंशानुगत स्वरूप है।

सैनिक प्रशासन

राजा एक स्थाई सेना रखता था जिसकी संपूर्णता सामंतों की सेना के द्वारा हो जाती थी। गुप्त काल में अश्वारोही तथा सेना का महत्व बढ़ गया तथा घुड़सवार एवं धनुर्धर सेना के महत्वपूर्ण भाग बन गए।

राजस्व प्रशासन

गुप्त काल की कर प्रणाली इतनी विस्तृत व संगठित नहीं थी। ग्रामीणों को विविध प्रचलित कर देने पड़ते थे। उनको हिरण्य या नगद भी देना पड़ता था। शिल्पियों को भी कुछ शुल्क देना पड़ता था, व्यापारियों को व्यापारिक वस्तुओं पर कर देना पड़ता था जो सीमा शुल्क अधिकारियों के द्वारा वसूल किए जाते थे।

राजस्व विभिन्न रूपों में लिया जाता था धनी कृषक नगद कर देते थे। कर उपज का 1/6 भाग से अधिक नहीं होता था।

न्यायिक व्यवस्था

गुप्त काल में एक विशेष न्यायिक व्यवस्था दृष्टिगत होती है जो इसके पूर्वर्ती कालों में नहीं दिखती है गुप्तकालीन विकसित न्यायिक व्यवस्था को सामाजिक आर्थिक परिवर्तनों का परिणाम माना जा सकता है।

गुप्तकालीन दीक्षित न्यायिक व्यवस्था को इस काल में प्रचलित हो रहे भूमि दान व्यवस्था का परिणाम भी माना जा सकता है।

गुप्त काल में ऐसी स्थिति पैदा हो गई थी जहां सामाजिक नियंत्रण की अवधारणा अधिक महत्वपूर्ण हो गई और विधि व्यवस्था का विकास इसी सामाजिक नियंत्रण को बढ़ावा देने के लिए था।

गुप्तों के काल में विकसित वह विस्तृत न्यायपालिका व्यवस्था को इस अर्थ में समझा जा सकता है कि उस काल में कई प्रकार के न्यायालयों का उल्लेख मिलता है जैसे कारण न्यायालय अधिकरण न्यायालय ध धर्मसान न्यायालय आदि।

© JCERT not to be republished

गुप्तकालीन आर्थिक स्थिति

कृषि क्षेत्र

कृषि के विकास और विस्तार का काल था। विभिन्न प्रकार की भूमि क्षेत्रों का उल्लेख जैसे क्षेत्र, खिल, बंजर भूमि, अप्रहण, गोपथसरा आदि मिलता है। भूमि माप का भी उल्लेख मिलता है जैसे द्रोणवाप, कुल्यावाप, विवर्तन आदि। विविध प्रकार की फसलों की उपज होती थी तथा कृषकों की अवस्था बड़ी संतोषजनक थी इसके प्रमाण मिलते हैं।

शिल्प एवं उद्योग क्षेत्र

गुप्त काल में भारतीय उद्योग धंधों की स्थिति संतोषजनक थी कुछ उद्योग धंधों में गुप्त कालीन भारत के कारीगरों को निपुणता प्राप्त थी। लोहे की वस्तुओं के निर्माण का उद्योग इसी प्रकार का एक धंधा था दिल्ली के महरौली में स्थित लौह स्तंभ आज भी अपनी उत्कृष्ट कारीगिरी द्वारा लोगों को आश्चर्यचकित कर देता है।

गुप्त काल में वस्त्र व्यवसाय काफी विकसित दशा में था यह देश का प्रमुख उद्योग धंधा था इसके प्रमुख केंद्र गुजरात, बंगाल, दक्षिण और तमिल देशों में अवस्थित थे।

स्वर्णकार का व्यवसाय समृद्ध अवस्था में था। इस काल में सोना चांदी और मनी की मूर्तियां भी बनाई जाती थी। दावे के बढ़िया बर्तन तैयार करने की उद्योग भी प्रचलित है। भगवान बुद्ध की कुछ ऐसी मूर्तियां मिली है जो पीतल और कांसे की बनी हुई है।

व्यापार क्षेत्र

व्यापार पूर्व की भांति चल रही थी व्यापार आंतरिक एवं ब्राह्य दोनों प्रकार के हो रहे थे। आंतरिक व्यापार की अवस्था काफी संतोषजनक थी और देश के एक भाग से दूसरे भाग तक व्यापारी अपनी विक्रय सामग्रियों के साथ किसी रोक-टोक के बिना आ जा सकते थे। आंतरिक व्यापार की उन्नति से नगरों के वैभव और ऐश्वर्य में अभिवृद्धि हुई नए नगरों की स्थापना हुई।

भारत का विदेशी व्यापार काफी विकसित अवस्था में थी और देश की आर्थिक समृद्धि का महत्वपूर्ण कारण था। विदेशी व्यापार जल तथा स्थल दोनों मार्गों द्वारा किया जाता था। स्थल मार्ग द्वारा भारत पूर्व में तिब्बत तथा चीन और पश्चिम में ईरान और अरब से व्यापार करता था। जल मार्ग द्वारा व्यापार अधिक परिमाण में किया जाता था।

श्रेणियां

प्राचीन भारत के आर्थिक जीवन में व्यापारियों और व्यवसायियों की श्रेणियों का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान था। गुप्त लेखों तथा मुहरों में कई स्थान पर व्यवसायिक श्रेणियों के अस्तित्व का पता चलता है। गुप्त युग में पटकार, मूर्तिकार, शिल्पकार, वनिक और व्यवसायियों की श्रेणियां विद्यमान थी।

यह श्रेणियां स्वतंत्र संस्थाएं होती थी और अपने ही नियमों तथा उप नियमों द्वारा संचालित होती थी। श्रेणियों के सदस्यों में आपस में जो मुकदमा हुआ करते थे उनका फैसला श्रेणी की व्यवस्थापिका करती थी राज्य की न्यायालय नहीं।

मौद्रिकरण

गुप्त शासकों द्वारा विभिन्न प्रकार के सिक्के जारी किए गए। दिनार सोने के सिक्के थे एवं रुपय्यक चांदी का सिक्का था।

सिक्कों के प्रचलन ने अर्थव्यवस्था के मौद्रिककरण को बल प्रदान किया। नगदी अर्थव्यवस्था के विकास से विभिन्न आर्थिक गतिविधियों को बल मिला। गुप्त काल के बाद के चरणों में मौद्रिककरण के स्तर में पतन दृष्टिगोचर होता है।

© JCERT not to be republished

गुप्तकालीन सामाजिक जीवन

गुप्तकालीन समाज वर्णाश्रम व्यवस्था पर आधारित था इसमें समाज चार वर्णों में विभाजित थे ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य एवं शूद्र।

छुआछूत व्यवस्था प्रचलित थी चांडालों को ग्रामीण इलाके में प्रवेश करने के पूर्व लकड़ियों से ढोल पीटकर आवाज देकर प्रवेश करना पड़ता था।

अंतरजातीय विवाह प्रचलित था जिससे एक नए जाति वर्ण संकर जाति की उत्पत्ति हुई। संयुक्त परिवार प्रथा प्रचलित में थी, बहुविवाह प्रथा प्रचलित थी लेकिन स्त्री दूसरा विवाह नहीं कर सकती थी।

510 ई० के एरण में भानु गुप्त के अभिलेख से सती प्रथा का प्रथम अभिलेखीय साक्ष्य प्राप्त होता है।

गुप्त साम्राज्य के पतन के कारण

आर्थिक कारण

भूमि अनुदान व्यवस्था के विकास से साम्राज्य की राजनीतिक व्यवस्था और आर्थिक व्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा साम्राज्य के आर्थिक आधार के प्रभावित होने से राजा की शक्तियों एवं नियंत्रण में भी पतन की स्थिति उत्पन्न हुई तथा राज्य के सैनिक शक्ति में पतन हुआ।

गुप्त काल के अंतिम चरण में व्यापार के पतन की प्रक्रिया शुरू हुई। व्यापार के पतन से राज्य की आय एवं राज्य की आर्थिक आधार दोनों ही प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुआ।

राजनीतिक पक्ष

गुप्तकालीन सामंती व्यवस्था को दो धाराओं के अंतर्गत समझा जा सकता है पहली धारा जहां अधीनस्थ शासकों की भूमिका से शुरू होती है वहीं दूसरी धारा का संबंध भूमि अनुदान व्यवस्था से जुड़ा हुआ है।

इन सामंतों ने आगे चलकर अपनी स्थिति मजबूत कर ली और जब गुप्त शासक कमजोर हुए तब उन्हें अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति का भरपूर मौका मिला।

भूमि अनुदान व्यवस्था के अंतर्गत जो प्रशासनिक दायित्व था वह राज्य से भूमि दान प्राप्त करने वाले लोगों को हस्तांतरित हो गया। राजकोषीय एवं अन्य विशेषाधिकार भी उन्हें प्रदान कर दिए गए जिससे इन क्षेत्रों में धीरे-धीरे राजकीय नियंत्रण भी कमजोर होता चला गया

हूणों के आक्रमण के प्रारंभिक चरण में इनकी शक्ति को संतुलित करने में गुप्त शासकों की भूमिका महत्वपूर्ण थी। लेकिन 550 ई० काल के लगभग 9 के पूर्वी मालवा पंजाब तथा राजस्थान एवं मध्य भारत के कुछ हिस्सों पर नियंत्रण की स्थापना से गुप्त साम्राज्य वादी शक्तियां प्रभावित हुई।

मालवा क्षेत्र के उद्भव से भी गुप्तों के लिए नई चुनौतियां उत्पन्न हुई। यशोधर्मन के प्रभाव से गुप्त साम्राज्य वादी प्रतिष्ठा प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुई।

© JCERT not to be republished

स्मरणीय तथ्य

मगध पर शासन करने वाला प्रथम वंश हर्यक वंश था।

मौर्य वंश के अंतिम शासक वृहद्रथ की हत्या पुष्यमित्र शुंग ने की थी और एक नए राजवंश शुंग वंश की नींव डाली।

अर्थशास्त्र की रचना कौटिल्य ने की यह राजनीतिक विज्ञान पर लिखा गया ग्रंथ है।

मगध की पहली राजधानी राजगृह और दूसरी राजधानी पाटलिपुत्र थी।

मौर्य वंश का सबसे महान और लोक कल्याणकारी शासक अशोक हुआ।

तक्षशिला विश्वविद्यालय पाकिस्तान में अवस्थित था।

मेगास्थनीज की रचना इंडिका से मौर्य नगरीय प्रशासन की जानकारी मिलती है।

रुद्रदामन ने स्वयं के खर्चे पर सुदर्शन झील की मरम्मत कराई थी।

अशोक के अभिलेख को पढ़ने का श्रेय जेम्स प्रिंसेप को जाता है।

भारत का नेपोलियन समुद्रगुप्त को कहा जाता है।

समुद्रगुप्त के जानकारी का प्रमुख स्रोत प्रयाग प्रशस्ति है जिसके लेखक हरिषेण थे।

चंद्रगुप्त द्वितीय के दरबार में नवरत्न रहते थे।

फाहियान चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में भारत आया।

प्रयाग प्रशस्ति में अशोक समुद्र गुप्त एवं जहांगीर के लेख उत्कीर्ण है।

© JCERT not to be republished

प्रश्नावली

बहुविकल्पी प्रश्न

1. मौर्य साम्राज्य का प्रथम शासक कौन था?

   a. बिंदुसार b. चंद्रगुप्त मौर्य c. अशोक d. महेंद्र

2. प्रयाग प्रशस्ति की रचना किसने की?

   a. कालिदास b. बाणभट्ट c. हरिसेण d. पंतजलि

3. 16 महाजनपदों में सबसे शक्तिशाली महाजनपद कौन था?

   a. मगध b. अवंती c. कौशल d. गंधार

4. पुराणों की संख्या कितनी है?

   a. 16 b. 18 c. 20 d. 19

5. किस शिलालेख से अशोक द्वारा कलिंग विजय का पता चलता है?

   a. प्रथम b. द्वितीय c. पांचवें d. तेरहवें

लघु उत्तरीय प्रश्न

1.मौर्य कालीन इतिहास के प्रमुख स्रोत बताइये।

2.गुप्त काल के आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डालें।

3.महाजनपद की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए और मगध की शक्ति के विकास के कारण बताइये।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. मौर्य प्रशासन की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन करें।

2. मगध के उत्थान के क्या कारण थे?

© JCERT not to be republished